POLITICAL SCIENCE Dept.
B.A. III (Hons.), Paper V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College,
Tajpur, Samastipur

लोक प्रशासन की प्रकृति

लोकप्रशासन की प्रकृति अथवा स्वरूप के सम्बंध में विद्वानों में परस्पर मतभेद पाया जाता है। कुछ विद्वान इसे कला मानते हैं तो कुछ विद्वान इसे विज्ञान मानते हैं तो कुछ इसे कला एवं विज्ञान दोनों की श्रेणी में रखते हैं।

लोकप्रशासन कला है

अनेक विद्वानों द्वारा लोक प्रशासन को कला माना गया है। अर्विक प्रशासन को एक कला मानते हैं। उनके अनुसार "अन्य कलाओं की भांति प्रशासन की कला को भी खोजा नहीं जा सकता। टीड के अनुसार "संक्षेप में प्रशासन एक ललित कला है।" प्रायः यह देखा गया है कि प्रशासक प्रशिक्षण द्वारा बनाए जाते हैंन कि पैदा किए जाते हैं। प्रशासनिक कला में निपुण व्यक्ति में कुछ गुणों की जरूरत होती है- धैर्य, नियंत्रण, हस्तांतरण, आदेश की एकता आदि गुणों के अभाव में प्रशासन अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निष्पादन नहीं कर सकता।

Scanned with CamScanner

लोकप्रशासन को निम्न आधार पर कला माना जा सकता है —

① सर्वमान्य सिद्धांत :-

लोक प्रशासन के कुछ सर्वमान्य सिद्धांत होते हैं। प्रशासक द्वारा इन सिद्धांतों या नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। इनकी उपेक्षा करने से सफलता नहीं मिल सकती।

② अभ्यास की आवश्यकता :-

प्रशासन का एक विशेष कौशल होता है। एक अच्छा प्रशासक बनने के लिए प्रशिक्षण अनुभव और अभ्यास की आवश्यकता होती है।

③ विशेष रूचि एवं गुण :-

एक कुशल प्रशासक बनने के लिए विशेष रूचि एवं गुण आवश्यक माने जाते हैं। प्लेटो ने प्रशासन को एक कला मानते हुए "दार्शनिक राजा" में कुछ विशेष गुण अनिवार्य बतलाए। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में और मैकियावली ने 'प्रिंस' में शासन की कला पर विचार किया है।

④ विकास की प्रक्रिया :-

अन्य कलाओं की भांति लोक

Scanned with CamScanner

प्रशासन का क्रमिक विकास हुआ है और अभी भी हो रहा है। विकास की दृष्टि से इसे कला माना जा सकता है। वैसे तो यह प्राचीन काल से विकसित होता हुआ आज के लोक प्रशासन के स्वरूप में पहुँचा है। परन्तु 1887 ई० के बाद से इसकी मौजूदा तस्वीर की रूपरेखा पहचानी जाने लगी। 1887 ई० में विल्सन के तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण के आधार पर लोक प्रशासन को स्थापित करने का प्रयत्न किया।

(5) परिवर्तनशीलता :-

जिस प्रकार अन्य कलाओं में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं उसी प्रकार लोक प्रशासन की प्रक्रिया भी समय-समय पर परिवर्तित होती रहती है।

इसप्रकार उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह माना जा सकता है कि लोक प्रशासन भी एक कला है। प्रशासक की सफलता और असफलता मानवीय वातावरण एवं परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

Scanned with CamScanner